मुख्य परीक्षा 02009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेण्डरी परीक्षा

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12-3-09

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट **A, B, C**,या **D**) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2001	B

केन्द्र क्रमांक की सील

111004

[redacted]

सीरियल क्रमांक **K**

4. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंकों में)

2	9	7	1	1	5	5	2	2

5. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

दो नौ [redacted]

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्न [redacted] उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में एक अंक[redacted]

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था क[redacted] क्रमांक 04 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं से[ट] सही लिखा है।

B S E M P

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) S.R. Tiwari

नाम Smt S. R. Tiwari पद U.D.T. M.L.B.

पता / संस्था M.L.B.

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मु[ख्य] उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

Shrivastava

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पु[स्तिका] चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन [...] पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक[...]

हस्ताक्षर (परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक......................................

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक...............................

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

③ [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 3 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

B S E M I

उत्तर = 1

रिक्त स्थानो की पूर्ति ⇒

(i) मीराबाई कृष्णभक्ति शाखा की कवियत्री है।

(ii) गणेश जी को सबसे पहले पूजा जाता है।

(iii) कबीर को "हृदयहीन कवि" कहा जाता है।

(iv) बलदाऊ श्रीकृष्ण को चिढ़ा-चिढ़ाकर परेशान करते है।

(v) सूरदास वात्सल्य के कुशल चितेरे है।

उत्तर ⇒ 2

सही विकल्प ⇒

1. आने वाली विपत्ति का पूर्ण निश्चय होता है:
उत्तर⇒ सम्भावना में

2. गजाधर बाबू ने भोजन बनाने की जिम्मेदारी सौंपी थी:
उत्तर⇒ बसंती और बहू को

पृष्ठ के अंकों का योग [ ]

(3) नए मेहमान आये थे:
उत्तर⇒ बिजनौर से

(4) सभी विषयों पर बोलने वालों को कहा जाता है:
उत्तर⇒ रेडीमेड अध्यक्ष

(5) हमारी स्मृति में स्थायी होते हैं:
उत्तर⇒ बचपन के अनुभव

उत्तर⇒3

सत्य / असत्य

1. केशवदास भक्तिकाल के प्रमुख कवि हैं।
उत्तर⇒ असत्य

(2) घनानंद रीतिसिद्ध कवि हैं।
उत्तर⇒ सत्य

(3) वीर रस का स्थाई भाव क्रोध होता है:
उत्तर⇒ असत्य

(4) मीराबाई रामभक्ति शाखा की प्रमुख कवियत्री हैं।
उत्तर⇒ असत्य

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

(5) जहाँ कारण के न रहते हुए भी कार्य हो जाता है, वहाँ विभावना अलंकार होता है।
उत्तर ⇒ सत्य

उत्तर = 4

सही जोड़ी ⇒

(अ)	सही उत्तर
(1) कठिन काव्य का प्रेत कहा गया है।	केशवदास
(2) हमें अशिक्षित या असभ्य बताने वाले लोग है।	पाश्चिमी देश
(3) "वह सिपाही" कविता के रचियता है।	विष्णुकांत शास्त्री
(4) झुकाने की सामर्थ्य है	वीर
(5) "पल्लव वसना" कहा गया है।	सूखी डाली

पृष्ठ के अंकों का योग

पृष्ठ + पृष्ठ 6 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

उत्तर ⇒ 5

एक वाक्य में उत्तर ⇒

(1) "तीमीर गेह में किरण आचरण" ललित निबन्ध के लेखक कौन है?

उत्तर ⇒ डॉ॰ श्याम सुंदर दुबे

(2) सूरदास के पदों की भाषा कौन सी है?

उत्तर ⇒ ब्रजभाषा

(3) गजाधर बाबू के लिए मधुर संगीत क्या थी?

उत्तर ⇒ पटरियों पर चलने वाली ट्रेनो की खट-खट

(4) "गाय करूणा की कविता है" यह कथन किसका है?

उत्तर ⇒ महात्मा गाँधी

(5) गौरा को गुड़ में सुई लपेट कर किसने खिलाई?

उत्तर ⇒ ग्वाल ने

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर क्र० 6 (ब)

बीती विभावरी जाग री,
अम्बर पनघट में डुबो रही,
तारा घट ऊषा नागरी,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो लतिका भी भर लाई,
मधु मुकुल नव रस गागरी।

विभावरी अर्थात् रात्रि के बीत जाने पर एक सखी अपनी दूसरी सखी से कहती है कि रात्रि बीत चुकी है और ऊषा रूपी स्त्री अम्बर रूपी पनघट में तारे रूपी घट डुबो रही है। यहाँ प्रकृति पर मानवीकरण अंलकार आरोपित किया गया है। यहाँ पर प्रातः काल रमणीयों के घड़े लेकर नदी से पानी भरने का दृश्य चित्रित किया गया है। पक्षी प्रातः होते ही चहकने लगते हैं और सुगन्धित समीर के बहने से किसलय प्रसन्नता से इधर-उधर डोल रही है और लता भी अपने पुष्प रूपी घड़े में रस भरकर ले आई है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर ⇒ 7(ब)

" हम तुम बहुत पुराने साथी,
दोनों तन-मन से कोमल,
दोनों में है यौवन और आकर्षण,
दोनों कल मुरझा जाएँगे,
करके क्षण भर मधु वर्षण
देखो मालिन मुझे न तोड़ो।

फूल मालिन से कहता है कि मालिन मुझे मत तोड़ो। हम-तुम बहुत पुराने साथी हैं। हम दोनों तन मन से कोमल है। तुम गृह में और मैं उपवन में फल फूल रहा हूँ। हम दोनों में यौवन और आकर्षण है। मैं इस संसार में और अधिक समय तक जीवित रहकर अपनी मधु और सुगंध संसार को अर्पण करना चाहता हूँ। जब फूल संसार को अपना समस्त मधु और सौन्दर्य अर्पण कर देगा। तब फूल मुरझा जाएगा। मालिन रूपी चेतना जन-जन के मन से प्रेम एकत्रित करके जन प्रेम अर्पण कर देगी तब मालिन भी मुरझा जाएगी। फूल और मालिन अपना यौवन और आकर्षण का मधुवर्षण कर मुरझा जाएँगे। फूल और मालिन दोनों का जीवन परोपकारी है।

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

उत्तर => 8 (अ)

प्रयोगवादी कविता => सन् 1943 में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन "अज्ञेय" के नेतृत्व में एक आंदोलनकारी लहर उठी जो प्रयोगवादी कविता के नाम से जानी जाती है। सन् 1943 में अज्ञेय के संपादन में तारसप्तक का प्रकाशन हुआ जिसने प्रयोगवाद का स्वरूप स्पष्ट कर दिया। उसके बाद 1951 में द्वितीय तार सप्तक प्रकाशित
प्रयोगवादी लेखक => (1) अज्ञेय => नदी के द्वीप
(2) मुक्तिबोध => चाँद का मुँह टेढ़ा है, इन्द्रधनुष रौंदे हुए।

प्रयोगवादी कविता की विशेषताएँ =>

प्रयोगवादी कविता की विशेषताएँ निम्नलि. है =>

(1) व्यक्तिवाद की प्रधानता => प्रयोगवादी कविता में व्यक्तिवाद की प्रधानता विद्यमान है, इसमें व्यक्ति को अधिक महत्व दिया गया है।

(2) सरस भाषा शैली => प्रयोगवादी कविता में सरस भाषा शैली अपनाई जाने के कारण रचनाएँ आसानी से समझ आती है।

(3) नारी के प्रति नवीन भावना => प्रयोगवादी कविता में नारी के प्रति नवीन भावना का चित्रण किया गया है।

(4) प्रकृति चित्रण => इस कविता में प्रकृति के सौन्दर्य

पृष्ठ के अंकों का योग

(5) रूढ़ियों व कुरीतियों पर प्रभाव ⇒ प्राचीन समय से चली आ रही रूढ़ियों व कुरीतियों का इस कविता द्वारा विरोध किया गया है।

(6) निराशावादिता ⇒ प्रयोगवादी कविता में कवियों में निराशावाद की प्रवृत्ति पाई जाती थी जिसका प्रभाव उनकी रचनाओं में भी देखने को मिलता है।

उत्तर ⇒ 9 (अ)

हिन्दी में 'उपन्यास सम्राट' प्रेमचन्द्र जी को कहा जाता है। प्रेमचन्द जी द्वारा उत्कृष्ट कोटि के उपन्यासों की रचना की है जो हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। प्रेमचन्द द्वारा रचित उपन्यासों में ग्रामीण जीवन, परिवेश व कुरीतियों की प्रधानता है। उपन्यास के अतिरिक्त प्रेमचन्द जी ने निबन्ध, नाटक, कहानी की भी रचना की है।

उपन्यास सम्राट द्वारा रचित उपन्यासों के नाम

1. गोदान
2. गबन
3. सेवासदन
4. निर्मला

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर => 10 (ब)

ताप पिघलने से तात्पर्य है विरह जन्य दुःखों का कम होना। पति के वियोग का दुःख कभी कम नहीं होता है चाहे विरही मरुस्थल की गर्मी में रहे या हिमालय की शीतलता में। विरह की आग्नि की तपन की गर्मी हमेशा एक समान रहती है। यशोधरा का विरह वियोग हर पल, हर स्थान पर एक समान रहता है। कुछ समय के लिए यह कम हुआ लगता है पर वास्तव में होता नहीं है। हिमालय की तराई में अर्थात सर्द भरे वातावरण में रहने पर भी यशोधरा का ताप कम नहीं होता है। गौतम से विरह की आग्नि उनके हृदय में हमेशा जलती रहती है। लक्ष्मण की विरहिणी उर्मिला ने भी ऐसा ही अनुभव किया था। इसलिए लेखक डॉ. रघुवीर सिंह ने लिखा है कि हिमालय की छाँह में रहकर भी यशोधरा का ताप पिघलता नहीं है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(12) योग + [ ] = पृष्ठ 12 के अंक

BSEMP

उत्तर => 11 (ब)

श्रीकृष्ण की बाँसुरी की टेर सुनकर देवकी को ऐसा अनुभव होता है मानो वह कारागार से निकलकर एक अलग दुनिया मे पहुँच गई है। जहाँ बहुत प्रकाश है, चारो तरफ हरियाली और प्राकृतिक सौन्दर्य है। गाय घास चर रही है और उनके बीच श्रीकृष्ण बाँसुरी बजा रहे है। बाँसुरी की टेर सुनकर उन्हे ऐसा लगता है कि वह इस लोक परलोक से ऊपर उठ गई है। वह अपने अंदर असीम शांति व सुख का अनुभव कर रही है। वह अपनी कल्पना की दुनिया मे पूरी तरह से डूब गई थी उस दुनिया मे न तो उन्हे कंस का भय था और न ही कृष्ण से विरह का दुःख। क्योंकि उस दुनिया मे उनका प्रिय पुत्र कृष्ण उनके सामने बैठकर बाँसुरी बस बजा रहा था। वह उसे वात्सल्य से भरी हुई ममता से निहारती है उनके साथ खिलती है, उन्हे गोदी मे बिठाकर पुचकारती है। श्रीकृष्ण की बाँसुरी की टेर मे एक अजीब सा आकर्षण है जो देवकी को अपने पास बुला रहा है।

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर => १२ (अ)

शांत रस की परिभाषा =>

सहृदय के हृदय मे स्थित निर्वेद स्थायी भाव का जब संचारी भाव, विभाव और अनुभाव से संयोग हो जाता है तब शांत रस की उत्पत्ति होती है। शांत रस का स्थायी भाव निर्वेद है, जिसका आशय है सांसारिक भाव से विरक्ति, ईश्वर की आराधना और अज्ञात सत्ता के प्रति प्रेम। भक्ति भाव से परिपूर्ण काव्य मे शांत रस पाया जाता है। शांत रस शांति का प्रतीक होता है इसमे आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है।

शांत रस का उदाहरण =>

जा दिन मन पक्षी उड़ि जैहै,
ता दिन तेरे तन तरुवर के सबै पात झरि जैहैं,
या देही को गरब न करिये, स्यार काग गिद्ध खैहैं।

व्याख्या => कहा गया है कि जिस दिन मन पक्षी बनकर उड़ जाएगा उस दिन तन रूपी तरुवर के सभी पत्ते झर जाएँगे। हमें इस देह का गर्व नहीं करना चाहिए क्योंकि मरने के पश्चात इस देह को स्यार, काग गिद्ध खायेंगे।

BSEMP

1

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर ⇒ 13 (1)

(अ) मुहावरों का वाक्य प्रयोग

(i) आँखों का तारा ⇒ बहुत प्रिय होना
वाक्य ⇒ प्रेरणा अपने माता-पिता की आँखों का तारा है।

(ii) अंधे की लाठी ⇒ एक मात्र सहारा
वाक्य ⇒ राम अपने माँ-बाप का एकमात्र सहारा है इसलिए लोग कहते हैं राम अंधे की लाठी है।

(ब) मध्यप्रदेश में बोली जाने वाली बोलियों का क्षेत्र ⇒

बुंदेली ⇒ रीवा, सतना, शहडोल व बालाघाट क्षेत्र इस बोली के अन्तर्गत आते हैं।

मालवी ⇒ यह मालवा के पठार में बोली जाती है। इसलिए इसे मालवी कहते हैं। यह इन्दौर, उज्जैन और देवास में भी बोली जाती है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर ⇒ 14

लेखक परिचय

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

रचनाएँ ⇒ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी की रचनाएँ निम्नलि हैं-
रस मीमांसा,
हिन्दी साहित्य का इतिहास

भाषा ⇒ शुक्ल जी की भाषा प्रौढ़, परिष्कृत साहित्यिक खड़ी बोली है। उनकी भाषा में सौष्ठव व सजीवता है। वाक्य विन्यास कुछ लम्बे हैं। मुहावरो व कहावतों का प्रयोग किया गया है। शुक्ल जी की भाषा में गंभीर विवेचन की अपूर्व शक्ति है। शुक्ल जी की भाषा में कहीं भी शिथिलता देखने को नही मिलती है।

शैली ⇒ शुक्ल जी अपनी शैली के स्वयं निर्माता थे। उनकी शैली व्यास से प्रारम्भ होकर समास शैली तक जाती है। एक वाक्य को सूत्र के रूप में कहकर फिर उसकी व्याख्या कर देते थे। भावात्मक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विवेचनात्मक शुक्ल जी की शैलियो के प्रकार है जिनके द्वारा उन्होंने

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(ग) साहित्य में स्थान ⇒ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य में वही स्थान है जो रामचरितमानस में राम जी का है। अर्थात शुक्ल जी का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। उनके द्वारा रचित रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि हैं। गद्य की विकास युगों में शुक्ल युग सबसे महत्वपूर्ण है जो इन्हीं के नाम पर रखा गया है।

उत्तर ⇒ 15

कवि परिचय

सूरदास

(क) रचनाएँ ⇒ सूरदास जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं -
(1) सूरसागर
(2) सूरसारावली

(ख) भाव पक्ष ⇒ सूरदास जी का भाव पक्ष अत्यन्त माधुर्य व कोमल भावनाओं से युक्त है। इनका भाव पक्ष इस

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(1) बाल वर्णन => सूरदास जी का बाल वर्णन विश्व साहित्य की अनुपम निधि है।
(2) प्रकृति चित्रण => कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन करते समय इन्होंने विशद रूप मे प्रकृति चित्रण किया है।
(3) भक्ति भावना => कृष्ण की रचनाएँ भक्ति भावना से परिपूर्ण हैं। इसमे कृष्ण की भक्ति निहित है।
(4) सखा भाव => कृष्ण से सखा का भाव सूरदास की रचनाओ में भली प्रकार से देखने को मिलता है।
कला पक्ष => सूरदास जी का कला पक्ष भाव पक्ष की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ है।
(1) रस => सूरदास जी ने अपनी रचनाओ मे शान्त रस का अधिक प्रयोग किया है। क्योकि इन्होने भक्ति भाव से परिपूर्ण रचनाएँ लिखी हैं। श्रृंगार व करुण रस भी इनके काव्य मे है।
(2) छंद योजना => सूरदास जी की अलंकार योजना बहुत ही अद्भुत है। इन्होंने दोहा, सोरठा, छप्पय व चौपाई जैसे छंदो का प्रयोग अपनी रचना में किया है।
(3) अलंकार योजना => सूरदास जी ने अनुप्रास, रूपक उत्प्रेक्षा, यमक व श्लेष अलंकारो का भी प्रयोग किया है।

पृष्ठ के अंको का योग

(iii) साहित्य मे स्थान => सूरदास जी का हिन्दी साहित्य मे महत्वपूर्ण स्थान है। कृष्ण की बाल-लीलाओ की काव्य रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। कृष्ण की लीलाओ का जितना विशद वर्णन सूरदास जी ने किया है उतना विशद आज तक किसी ने नही किया। यद्यपि सूरदास जी अंधे थे पर उन्होने मन की आँखो से कृष्ण की लीलाओ को देखकर उसका वर्णन किया है इसलिए सूरदास जी का बालवर्णन अद्भुत है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर → 16 (ब)

(ब) असल प्रकाश ... वहा है

सन्दर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक भारती के "तिमिर गेह मे किरण आचरण" नामक ललित निबंध से लिया गया है। इसके लेखक "डॉ श्यामसुंदर दुबे है।

प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गद्यांश मे जीवन मे छुपे हुए "सृजन के प्रकाश" का महत्व बताया गया है।

व्याख्या ⇒ लेखक डॉ श्याम सुंदर दुबे जी कहते है कि जीवन का असली प्रकाश तो हमारे अंदर छुपा हुआ है और उस प्रकाश का नाम है- सृजन का प्रकाश। लेखक कहते है कि यदि व्यक्ति का आचरण, शील, श्रम विवेक और ~~और~~ भावना किसी को छु लें तो वह व्यक्ति भी उसी प्रकार प्रकाशित हो जाता है जिस बल्ब या दीपक के प्रकाश से आस पास का वातावरण प्रकाशित है। यदि हम उस प्रकाशित व्यक्ति के जीवन के गुणो व आदर्शों को ग्रहण कर ले तो हमारा जीवन भी प्रकाशित हो सकता है। इस सृजन प्रकाश मे इतनी शक्ति है कि यह बड़े-२ अंधेरों को तराशकर प्रकाश निर्झर बना देते है अर्थात कठिनाईयों व बाधाओ को हटाकर एक चमकयुक्त आदर्श जीवन प्रस्तुत

BSEMP

करता है।

विशेष => (1) गद्य की भाषा सरल, सरस व बोधगम्य है।

(2) गद्य में आशावादी दृष्टिकोण परिलक्षित होता है।

उत्तर => 17 (अ)

पद्यांश की व्याख्या

(अ) भाई एक लहर ... ध्रुवतारा है।

सन्दर्भ => प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक भारती के "प्रेम और वात्सल्य" के भाई-बहन से अवतरित है। इसके कवि राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाले श्री 'गोपाल सिंह नेपाली' है।

प्रसंग => प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने भाई बहन के प्रेम को राष्ट्रीय प्रेम में परिवर्तित कर प्रस्तुत किया है।

व्याख्या => कवि गोपाल सिंह नेपाली कहते हैं कि भाई एक लहर बन कर देश की रक्षा करेगा तो बहन नदी की धारा बनकर देश की रक्षा करेगी। जब

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

गंगा सागर से संगम के लिए जाती है तब उसकी धारा उमड़ती है और वह अपने किनारो को डुबो देती है इसी प्रकार बहन भी नदी की धारा बनकर देश के दुश्मनो को डुबो देगी। इस राष्ट्रीय प्रेम व भक्ति व रक्षा के संघर्ष मे दुःख मे भाई बहन का सहारा है और बहन भाई का सहारा है। अल्हड़ भाई जिसने अपना जीवन मौजमस्ती मे बिता दिया, बहन उसकी ध्रुवतारा है जो अपने लक्ष्य के प्रति सदैव अटल व दृढ़निश्चयी रही है।

भाव सौन्दर्य (1) भाई - बहन कविता मे ओज गुण की प्रधानता है।

(2) इसमे देश प्रेम को चित्रित किया गया है।

(3) इस कविता मे वीर रस की प्रधानता है।

SEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर ⇒ 18

अपठित गंधाश

धर्म पालन - - - - हो जायेगा"

उत्तर ⇒ (i) गधांश का उचित शीर्षक है ⇒
धर्मपालन और आत्मा का संबंध

उत्तर ⇒ (ii) धर्म का मानव जीवन मे विशेष महत्व है यद्यपि उसके पालन में अनेक बाधाऐं आती है पर धर्म से आत्मा को शांति और मन को शुद्धि मिलती है।

उत्तर ⇒ (iii) धर्म पालन के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता से पड़ती है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

23

योग पूर्व पृष्ठ 61 + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक 66

उत्तर 19 (अ)

ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगाने हेतु

सेवा में,

श्रीमान् जिलाधीश महोदय,
जिला - जबलपुर,
जबलपुर (म.प्र.)।

विषय :- परीक्षा काल में ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मार्च माह का समय हमारी परीक्षा काल का समय है जिसके लिए अध्ययन हेतु हमें एकाग्रता की आवश्यकता है। परन्तु ध्वनि विस्तारक यंत्रों द्वारा बाधा उत्पन्न हो रही है जिसके कारण हम सभी विद्यार्थी को अध्ययन कार्य में बाधा उत्पन्न हो रही है।

अतः आपसे यह सविनय अनुरोध है कि आप ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगाने की कृपा करें।

दिनाँक - 03/03/09

प्रार्थी
शा० उ० मा० विद्यालय के
सभी छात्र
जबलपुर (म.प्र.)

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर => 20

प्रदूषण : कारण और निदान

प्रदूषण का अर्थ => प्रदूषण वह तत्व है जिसके द्वारा वायुमण्डल का वातावरण प्रदूषित होता है। प्रदूषकों द्वारा प्रदूषण होता है। यह प्रदूषक तत्व जल, वायु, भूमि मे घुलकर वायु को प्रदूषित करता है। प्रदूषण का सबसे बुरा प्रभाव हमारे वातावरण पर पड़ता है जिनके कारण इस प्रदूषण का प्रभाव इस वातावरण मे रहने वाले लोगों यानी हम पर पड़ता है। पृथ्वी पर प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है जो हमारे अस्तित्व के लिए खतरा है।

प्रदूषण के कारण => प्रदूषण अनेक कारणों से होता है। परन्तु इसके प्रमुख कारण है -

(1) औद्योगिक प्रदूषण => सबसे अधिक प्रदूषण उद्योगों द्वारा होता है। जो गंदे पदार्थ, रासायनिक पदार्थ नदियों, तालाबों व झीलों मे बहा देते हैं।

(2) परिवहन के साधनों द्वारा प्रदूषण => मोटर गाड़ी, वायुयान आदि परिवहन के साधनों द्वारा

BSEMP
पृष्ठ के अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

उच्च परीक्षा 2009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

हाई स्कूल परीक्षा / हायर सेकेण्डरी परीक्षा

1. केन्द्र की सील

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक

3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील Shrivastava

4. केन्द्र क्रमांक 711002

6. परीक्षा का नाम हायर सेकण्डरी

7. विषय हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी

8. दिनांक 12/03/09

पृष्ठ

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

भी प्रदूषण होता है। ये प्रदूषण इन साधनों द्वारा छोड़ी गई विषैली गैसों व कार्बन मोनो गैस निकलती है।

प्रदूषण के प्रकार => प्रदूषण के प्रमुख प्रकार निम्न है ये प्रदूषण के प्रमुख प्रकार है।

(1) जल प्रदूषण => उद्योगों द्वारा गंदा जल, अपशिष्ट पदार्थ, रासायनिक पदार्थ नदियों झीलों व तालाब में बहा दिए जाते हैं जिसके कारण जल प्रदूषण होता है। मथुरा रिफाइनरी से निकले पदार्थों ने यमुना व गंगा नदी को प्रभावित कर दिया है।

(2) वायु प्रदूषण => वायु प्रदूषण उद्योगों व परिवहन के साधनों द्वारा निकली विषैली गैसों द्वारा होता है। वायु प्रदूषण के कारण दमा, अस्थमा व श्वास सम्बन्धी बीमारियाँ हो जाती है। वायु प्रदूषण प्राणों के लिए अत्यन्त घातक है।

ध्वनि प्रदूषण → ध्वनि विस्तारक यंत्रो व परिवहन के साधनों द्वारा ध्वनि प्रदूषण होता है।
रासायनिक प्रदूषण → मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए उसमें खाद व रासायनिक पदार्थ डालते हैं जिससे यह प्रदूषण होता है।
भूमि प्रदूषण → भूमि प्रदूषण रासायनिक पदार्थों के भूमि में बहाए जाने से उत्पन्न होता है।
प्रदूषण रोकने के उपाय → प्रदूषण रोकने के लिए निम्नलि उपाय किए गए हैं –
1. प्रदूषण निरोध अधिनियम बनाए गए हैं।
2. गंदा पानी, रासायनिक पदार्थ, अपशिष्ट पदार्थ नदियों में न बहाकर जल प्रदूषण रोका जा सकता है।
3. परिवहन के साधनों की ध्वनि को नियंत्रित करके ध्वनि प्रदूषण को रोका जा सकता है।
4. उद्योगों की चिमनियाँ ऊँची बनाई जाए जिससे वायु प्रदूषण कम होगा।
5. उर्वरता बढ़ाने के लिए अधिक रासायनिक पदार्थों का उपयोग न किया जाए।

(3) [ ] + [ ] = [ ]

प्राप्त पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 3 के अंक | कुल अंक

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

4

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग